International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 01 January- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

'प्राथ मक वद्यालयों के अध्यापकों के समायोजन का अध्ययन"

(बागपत जनपद के वशेष सन्दर्भ में)

डॉ० सतीश कुमार

(प्रवक्ता शक्षा शास्त्र)

इंटर कॉलेज कालागढ़ पौड़ी गढ़वाल उत्तराखंड

सारांश

औपचारिक शक्षा हेतु वद्यालय एक सशक्त माध्यम के रूप में वधमान है । प्राथ मक शक्षा, माध्य मक शक्षा व उच्च शक्षा के लए आधार का काम करती है । प्राथ मक वद्यालयों में पढने वाले छात्र/छात्राएं शक्षा प्राप्त करने की प्रारं भक अवस्था में होते है। ऐसी अवस्था में अध्यापकों का परम दायित्व होता है क वें छात्रो के समायोजन करने में सहायता करें परन्तु यदि अध्यापक स्वयं समायोजित नहीं है तो वो छात्रों के समायोजन में सहायक नहीं हो पाएंगे ।

अध्यापको की समस्याओं को दूर कार सरकार, प्रबंध तंत्र, समाज, अध्यापकों को अपने वद्यालय एवं परिवेश में समायोजन करने में सहायक होगा । भारत सरकार द्वारा प्राथ मक शक्षा समीक्षा हेतु गठित ताराचंद स मति" (**1948**), **1952** में "प्राथ मक शक्षा आयोग", **1965-66** में "राष्ट्रीय शक्षा आयोग" (कोठारी आयोग) ने भी अपनी सफारिशो में अध्यापक समायोजन पर वशेष बल दिया है ।

संकेत शब्द - प्राथ मक स्तर, समायोजन, आयोग, शै क्षक, समष्टि, परिसूची, सांख्यिकीय, प्र व धयां.

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार ने सर्वप्रथम 1948 में वश्व वद्यालय आयोग (राधाकृष्णनन क मशन) का गठन कया जिसने अपनी रिपोर्ट में एक सुझाव यह भी दिया की वश्व वधालयी शक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के लए यह आवश्यक है क उसके पूर्व की प्राथ मक शक्षा के स्तर को ऊँचा उठाया जाये । प्राथ मक शक्षा हेतु सरकार ने हंटर कमीशन का गठन कया , इस स मति द्वारा शक्षको के सम्बन्ध में यह सुझाव दिया गया क शक्षको के वेतनमान और सेवाशर्ते "केन्द्रीय शक्षा सलाहकार बोर्ड के प्रस्तावों के अनुकूल हो" ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 01 January- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भारत सरकार के द्वारा गठित हंटर कमीशन ने प्राथ मक शक्षा के वकास को प्राथ मकता देने की शफारिश की । शक्षको के वेतनमान निश्चित करने के लए एक वशेष स मति का गठन करने की सफारिश की गयी जो समय-समय पर महंगाई को ध्यान में रखकर निश्चित स्तर के शक्षको के वेतनमान निश्चित करे तथा समान योग्यता और समान कार्य करने वाले शक्षको के वेतनमान समान हो चाहे वो कसी भी प्रकार के वद्यालय में कार्यरत हो । ता क उनके समायोजन में कसी प्रकार की बाधा न पड़े । राष्ट्रीय शक्षा आयोग (कोठारी आयोग) 1965-66 द्वारा भी शक्षको के समायोजन हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिए गये !

समाज के वकास में वद्यालयों की भू मका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है । इसी प्रकार वद्यालयों में शक्षको की भू मका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है । वद्यालयों में शक्षा प्र क्रया द्वारा बालक का सर्वांगीण वकास करने का प्रयास कया जाता है ।

समाज में नित नये परिवर्तन दृष्टिगोचर होते रहते है । नवीन परिस्थितियों, आवश्यकताओं एवं अन्वेषणों के तदनुरूप बदलते समय एवं ज्ञान के साथ समाज में तादात्मय स्था पत करना होता है, साथ ही समाज को यह व्यवस्था करनी होती है क परिवर्तनशील दशाओं में उसकी भावी पीढ़ी जो उसका भ वष्य है, कुसमयोजित होकर अनुपयोगी न हो जाये । इस हेतु ही शक्षण व्यवस्था की रचना कर समाज ने उसे शक्षको के हाथों में सोंप दिया है । शक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने हेतु शक्षको का समायोजित होना भी अति आवश्यक है ।

भारत सरकार द्वारा भारतीय सं वधान में अनुच्छेद- 21ए जोड़कर बच्चो के लए नि:शुल्क एवं अनिवार्य शक्षा का प्रावधान कया गया है । भारत सरकार द्वारा शक्षा के सार्वभौ मकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु समय-समय पर कई शै क्षक कार्यक्रम जैसे:- शक्षा गारंटी योजना, मध्याह्न भोजन योजना, प्रौढ़ शक्षा कार्यक्रम आदि चलाये गये । इस प्रकार के कार्यक्रमों की सफलता एवं क्रयान्वयन हेतु सरकार द्वारा भरसक प्रयास कया गया परन्तु इनमे पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो सकी इन योजनाओ के पूर्ण हो पाने या न हो पाने में अन्य कारणों के साथ-साथ अध्यापको के समायोजन की भी भू मका होती है । अध्यापको का सही रूप से समायोजित न हो पाना, जहाँ उनकी कार्य क्षमता पर प्रभाव डालता है, वहीं दूसरी और छात्रो की शै क्षक उपलब्धि को भी प्रभा वत करता है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 01 January- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उद्देश्य:- प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य- "प्राथ मक वद्यालयों के अध्यापको के समायोजन का अध्ययन करना ।"

न्यादर्श:- प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि के रूप में बागपत जनपद के प्राथ मक वद्यालयों को लया गया है । इस समष्टि में से न्यादर्श के रूप में प्राथ मक वद्यालयों के 100 अध्यापको (50 ग्रामीण व 50 शहरी) का उद्देश्यपरक न्यादर्श के रूप में चयन कया गया है ।

सीमांकन:- प्रस्तुत अध्ययन को बागपत जनपद के प्राथ मक वद्यालयों के शक्षको तक स मत कया गया है ।

उपकरण:-

प्रस्तुत अध्ययन हेतु डॉ० एस०के० मंगल द्वारा नि र्मत "मंगल शक्षक समायोजन परिसुची (लघुरूप)" **(Mangal Adjustment Inventory Short Film)** का प्रयोग प्रदत्तो के संकलन हेतु कया गया । इस समायोजन परिसुची का निर्माण भारतीय वद्यालयों में कार्यरत शक्षको के समायोजन या कुसमायोजन का निर्धारण करने हेतु कया गया है । इस परिसुची में कुल 70 पद है । जिनका उत्तर दो वकल्प हां या ना के रूप में देना है। लेखक द्वारा इस परिसुची का निर्माण क्रमबद्ध रूप में एवं अत्यन्त सावधानी पूर्वक कया गया है । ये एक मानकीकृत परिसुची है ।

प्रदत्तो का वश्लेषण, परिणाम एवं ववेचना :-

डॉ०एस०के० मंगल द्वारा नि र्मत समायोजन परिसुची को ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के प्राथ मक वद्यालयों के 100 अध्यापको (50 शहरी व 50 ग्रामीण) पर प्रसारित कया गया । प्राप्त आंकड़ो का वश्लेषण सांख्यिकीय प्र व धयों द्वारा करने पर प्राप्त परिणामो को ता लका क, ख, ग में प्रद र्शत कया गया है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 01 January- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अध्यापको का समायोजन प्रद र्शत करती ता लका (ग्रामीण अध्यापक)

ता लका "क"

समायोजन का ववरण	अध्यापको का प्रतिशत
बहुत अच्छा	35 प्रतिशत
अच्छा	45 प्रतिशत
औसत	15 प्रतिशत
निम्न	5 प्रतिशत
अत्य धक निम्न	0 प्रतिशत

अध्यापको का समायोजन प्रद र्शत करती ता लका (शहरी अध्यापक)

ता लका "ख"

समायोजन का ववरण	अध्यापको का प्रतिशत
बहुत अच्छा	45 प्रतिशत
अच्छा	40 प्रतिशत
औसत	11 प्रतिशत
निम्न	4 प्रतिशत
अत्य धक निम्न	0 प्रतिशत

अध्यापको का समायोजन प्रद र्शत करती ता लका (पुरूष एवं महिला अध्यापक)

ता लका "ग"

समायोजन का ववरण	अध्यापको का प्रतिशत
बहुत अच्छा	40 प्रतिशत
अच्छा	48 प्रतिशत
औसत	7 प्रतिशत
निम्न	5 प्रतिशत
अत्य धक निम्न	0 प्रतिशत

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 01 January- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ववेचना:-

ता लका "क" में स्पष्ट है क ग्रामीण अध्यापको में 35 प्रतिशत अध्यापको का समायोजन अपने शै क्षक परिवेश में बहुत अच्छा पाया गया । 45 प्रतिशत अध्यापको का समायोजन अच्छा, 15 प्रतिशत अध्यापको का समायोजन औसत स्तर का पाया गया तथा 5 प्रतिशत अध्यापक निम्नस्तर पर समायोजित पाए गए । कोई भी ग्रामीण परिवेश का अध्यापक निम्नस्तर पर समायोजित नहीं पाया गया ।

ता लका "ख" से स्पष्ट है क शहरी अध्यापकों में 45 प्रतिशत अध्यापको का समायोजन अपने शै क्षक परिवेश में बहुत अच्छा पाया गया । 40 प्रतिशत अध्यापको का समायोज अच्छा, 11 प्रतिशत अध्यापको का समायोजन औसत स्तर पर पाया गया तथा 4 प्रतिशत अध्यापक निम्नस्तर पर समायोजित पाए गए । शहरी क्षेत्र का कोई भी अध्यापक अत्या धक निम्नस्तर पर समायोजित नहीं पाया गया ।

ता लका "ग" से स्पष्ट क प्राथ मक स्तर के अध्यापको (ग्रामीण व शहरी) में 40 प्रतिशत अध्यापको का समायोजन अपने शै क्षक परिवेश में बहुत अच्छा पाया गया । 48 प्रतिशत अध्यापको का समायोजन अच्छा, 7 प्रतिशत अध्यापको का समायोजन औसत स्तर का पाया गया तथा 5 प्रतिशत अध्यापक निम्नस्तर पर समायोजित पाए गये ।

निष्कर्ष:-

उपरोक्त आंकड़ो से स्पष्ट होता है क अ धकतर ग्रामीण व शहरी परिवेश के वद्यालयों के अध्यापको ने अपने-अपने में सही प्रकार से समायोजन कर रखा है तथा जिन अध्यापको का समायोजन कम आया है । उसका कारण वद्यालयों में प्रयाप्त संसाधन उपलब्ध न होना है ।

वद्यालय प्रबंधन तथा ग्रामवा सयों का वद्यालय में अनावश्यक दखल देना, कुछ अध्यापको का अन्तर्मुखी होना, अपने समान के प्रति संदेहप्रद रहना, वद्यालयों का मुख्य मार्ग से दूर होना (महिला अध्यापको के सम्बन्ध में) आदि प्रमुख है । इनके अतिरिक्त अध्यापको द्वारा छात्र-वृत्ति, मड-डे- मल (कक्षा 1 से 8) वद्यालय रख-रखाव आदि के कारण भी अध्यापको को समायोजन में कठिनाई होती है । छात्र-छात्राओं की कम उपस्थिति, वद्यालयों में शौचालयों का अभाव, वद्यालयों में वधुत का अभाव, पर्याप्त संख्या में शक्षको का न

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 01 January- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

होना, अ भभावकों का स क्रय सहयोग न मलना भी समायोजन को प्रभा वत करने वाले कारक पाए गये जिनके कारण अध्यापको का समायोजन प्रभा वत होता है ।

ता लका "क" व "ख' की तुलना करने पर ग्रामीण एवं शहरी अध्यापको के समायोजन में सार्थक अंतर प्राप्त नहीं होता है परन्तु कुछ एक बिन्दुओ जैसे शौचालयों की कमी, वद्यालयों का मुख्य मार्ग से दूर होना आदि ग्रामीण शक्षको के समायोजन को शहरी शक्षको की अपेक्षा अ धक प्रभा वत करता है ।

उक्त ता लकाओं से स्पष्ट है क व र्णत समस्याओं से निजात पाकर प्राथ मक वद्यालयों के शक्षको के समायोजन को बेहतर बनाया जा सकता है तथा वद्या र्थयों की उपलब्धि को भी बेहतर बनाया जा सकता है क्यों क बेहतर रूप से समायोजित शक्षक ही छात्र-छात्राओं को बेहतरीन शक्षा प्रदान कार सकते है ।

शक्षा प्रशासको, प्रबन्धको, नियोजको, अ भभावकों को भी इस और ध्यान देना चाहिए ता क शक्षा की मजबूत नींव पड़ सके । महिला शक्षको को अनुकूल वातावरण प्रदान करना, छात्र-छात्राओं की उपस्थिति को बढ़ाना, अध्यापको से मूल वषयो का अध्यापन करवाना, अध्यापको के सामने आने वाली समस्याओं को प्रशासको, नियोजको, स्थानीय जिम्मेदार व्यक्तियों, अ भभावकों व अध्यापकों द्वारा मलकर दूर कया जा सकता है ।

<u>सन्दर्भ :-</u>

- रायजादा रमाकर,2010 "नवनियुक्ति शक्षको को शे क्षक समझ व प्र शक्षण प्राथ मकताएं- प्राथ मक शक्षको के वशेष सम्बन्ध में" भारतीय आधुनिक शक्षा 2010 संस्करण एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली ।
- यादव, सतीश कुमार (2009) "अध्यापक शक्षा - समस्या व चुनोतियां" भारतीय आधुनिक शक्षा 30(2) 79-85, एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली ।
- माथुर एस०एस० (2000) – " शक्षा मनो वज्ञान" वनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- संह अरुण कुमार (2010) –" शक्षा मनो वज्ञान" बनारसी दास मोतीलाल प्रकाशन ,पटना

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 01 January- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- क पल एच०के० (2012) –"अनुसन्धान व धयाँ -व्यवहारपरक वज्ञानों में" एच०पी० भार्गव बुक हॉउस, आगरा
- मंगल एम०के० (2007) –"एडवांस एजुकेशन साईकोलॉजी" प्रेन्टिस हॉल ऑफ़ इं डया प्रा० ल०, नई दिल्ली ।